हर औरत का सपना घर हो उसका अपना

वीणा शिवपुरी

आपबीती—एक

अनिता बड़े धनी घर की बेटी थी। उतने ही धनी घर में ब्याही गई। मां-बाप ने दान-दहेज देने में कोई कसर न छोड़ी। सोचा होगा दान-दहेज से बेटी के लिए खुशियां खरीद लेंगे। धनी ससुराल में बेटी राज करेगी। हुआ बिलकुल उलट। पहले ही दिन से अनिता का पति और सास उससे नाराज थे। कभी उसके मामूली रूप-रंग का ताना, कभी उसके उठने-बैठने पर नाराज़।

पति धनी घर का लाड़ला बेटा था। उसकी शामें दोस्तों के साथ शराब पीने में बीततीं और रातें कहीं और। आधी-आधी रात गए घर लौटता। अगर अनिता कुछ पूछती तो उसके साथ मार पिटाई करता। वह सास के सामने दुखड़ा रोती तो वह भी बेटे का ही साथ देती। अनिता रोते-रोते आधी हो गई। उसने हर तरह से अपनी ससुराल वालों को खुश करने की कोशिश की। जैसा वे कहते वैसा ही करती, फिर भी वे लोग नाराज़ रहते।

एक साल बीत गया। आखिरकार वह थक गई। उसने मां-बाप से कहा—"आप मुझे यहां से ले जाओ। यहां मैं घुट-घुट के मर जाऊंगी। आपके पास किसी चीज़ की कमी नहीं। फिर मैं भी पढ़ी-लिखी हूं। सिर्फ मुझे आपका सहारा चाहिए।"

मां-बाप ने कहा—"ना बेटी। ब्याही बेटी की जगह ससुराल में होती है। दुनिया क्या कहेगी? बिरादरी थूकेगी। खानदान की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। तुझे जिंदगी वहीं काटनी है।"

आपबीती—दो

बबली गरीब घर की लड़की थी। घरों में झाड़ू-पोचे का काम करती और मज़े से रहती।

मां-बाप ने उसकी शादी कर दी। जब तक गौना नहीं हुआ था तब तक ठीक था। जैसे ही वह गौने के बाद ससुराल गई उसकी जिंदगी हराम हो गई। पति जो कुछ कमाता शराब और जुए में उड़ा देता। बात-बात में मारपीट करता।

बबली अभी कच्ची उम्र की थी। शारीरिक संबंधों को लेकर भी पति से झगड़ा हो जाता। वह रात-दिन की मारपीट और झगड़ों से तंग आ गई। एक दिन वो चुपके से भाग कर मायके आ गई। उसने मां से कहा—"मैं दो-चार घरों का काम पकड़ लूंगी। अपने पेट लायक कमा सकती हूं। तुम पर बोझ नहीं बनूंगी। मुझे ससुराल मत भेजो।" चार छः दिन बाद पति लिवाने आ गया।

मां ने कहा—"बबली औरत की ससुराल से अर्थी ही निकलती है। शादी के बाद हमारे घर में तेरे लिए कोई जगह नहीं।"

बबली खूब रोई-धोई। किसी का दिल नहीं पसीजा। मां-बाप ने जबरदस्ती पकड़ कर उसे ससुराल पहुंचा दिया। उसी नरक में जहां उसे रात-दिन लातें, घूंसे और गालियां मिलतीं। जहां कोई प्यार के दो बोल बोलने वाला न था।

आपबीती—तीन

लता शादी होने के पहले से ही बैंक में नौकरी करती थी। शादी के बाद भी उसने नौकरी नहीं छोड़ी। पति भी खुश था। दो-ढाई हजार रुपए घर लाती थी। एक लड़की हो गई। पति और सास का मुंह चढ़ गया। अब सबको लता में नुक्स नजर आने लगे।

सास कहती—"मैं घर का काम करूं। इस लड़की को भी संभालू और बहू सारा दिन दफ्तर में मौज करे।"

पति कहता—"तुम पैसे फिजूल खर्च करती हो। सारी तनखा मेरे हाथ में दिया करो।"

इसी बीच लता ने दूसरी बेटी को जन्म दिया। अब तो ससुराल वालों ने उसकी नाक में दम कर दिया। रोज़-रोज़ घर में झगड़े होते। लता तनाव में घिरी रहती। दफ्तर के काम में भी गड़बड़ी हो जाती। तंग आकर उसने फैसला किया कि वह तलाक ले लेगी।

मां ने सुनते ही कानों पर हाथ धर लिए। भाइयों ने कहा—"तुम पागल हो। झगड़े किस घर में नहीं होते। तुम्हें सहना चाहिए। चार पैसे कमाती हो तो सिर चढ़ गया है। औरत को झुक कर रहना चाहिए। हम तुम्हें नहीं रख सकते। हमें अपनी बेटियां भी तो ब्याहनी हैं।"

मां बोली—"अब तो घर के मालिक बेटे हैं। मैं बिना उनकी मर्जी के क्या कर सकती हूं।"

लता ने अलग घर किराए पर ले लिया और अपनी बेटियों के साथ रहने लगी। पास-पड़ौस में कानाफूसी होने लगी। औरतें देख कर मुंह फेर लेतीं। मर्द मुस्कुराते। रात गए कोई दरवाजा खटकाता तो कभी खिड़की पर कंकर बजते। लता बेटियों को छाती से चिपकाए जागती रहती। लता को छः महीने में चार बार मकान बदलना पड़ा।

बेघरबार औरत

मां-बाप के सहारा देने से इंकार करने के बाद एक दिन अनिता ने साड़ी का फंदा लगा कर आत्महत्या कर ली।

मां-बाप ने जबरदस्ती बबली को ससुराल भेज दिया। एक दिन मौका पाकर वो वहां से फिर भाग गई। आज किसी को नहीं मालूम कि बबली कहां है?

लता को भाइयों ने सहारा नहीं दिया। समाज ने उसे अकेली जीने न दिया। वो हार थक कर फिर ससुराल लौट गई। जहां वह हर रोज़ मर-मर कर जीती है।

ये औरतें जाएं तो जाएं कहां?

आज हज़ारों लड़कियां या तो फंदा लगा कर दुखों से छुटकारा पाने की कोशिश कर रही हैं, या फिर घर से भाग कर किसी कोठे पर पहुंच गई हैं। बहुत सी अपनी किस्मत को कोसती हुई कुढ़-कुढ़ कर जीती हैं।

क्या इनके लिए इतनी बड़ी दुनिया में कोई जगह ऐसी नहीं जहां वे सुरक्षा और सम्मान के साथ जी सकें। मां-बाप के घर में उसे जन्म से पराई समझा जाता है। ससुराल के घर का मालिक पति होता है। ससुराल में भी उसके लिए तभी तक जगह होती है जब तक वह उनकी जी-हजूरी करती रहे। समाज या सरकार ने ऐसी कोई जगह बनाई नहीं जहां अकेली औरतें रह सकें।

सवाल यह उठता है कि शादी होते ही लड़की का मां-बाप के घर रहने का हक़ क्यों छिन जाता है? घर के मालिक भाई क्यों बन जाते हैं?

कुछ अनजान लोगों के साथ विदा करके उसे निराधार क्यों छोड़ दिया जाता है? औरतें देश की जनसंख्या की आधी हैं। समाज, देश की तरक्की में पूरा हाथ बंटाती हैं। फिर उनके सिर पर छत क्यों नहीं? कोई ऐसा घर क्यों नहीं जहां वे अपने हक़ से रह सकें। केरल (दक्षिण भारत) की औरत के पास अधिकार है कि वह जब कभी चाहे अपनी मां के घर में जाकर रह सकती है। वहां उसका हिस्सा है, उसका हक़ है। क्या देश की लाखों औरतों को भी यह हक़ नहीं मिलना चाहिए? □